Part-II Paper-IV Sect-A - Unit-2.

Factors of Location of Industries

S. Mazumdar.

किसी भी प्रकृति प्रदत्त संसाधन को कच्चा सामग्री मान उसे संसाधित एवं परिवर्तित कर निर्मित सामग्री तैयार करना ही विनिर्माण उद्योग कहलाता है। जैसे:- लोहा अयस्क से लौह धातु प्राप्त कर उसे गलाकर एवं शोधकर अन्य वस्तुएँ बनाना विनिर्माण उद्योग का उदाहरण है।

किसी भी निर्माण उद्योग की तीन विशेषताएँ होती हैं -

1) किसी एक वस्तु का रूप आकार बदलकर दूसरी वस्तु बन जाती है।

2) निर्माण द्वारा वस्तु या पदार्थ का उपयोग बदल जाता है।

3) निर्माण के बाद पदार्थ की गुण एवं मूल्य में वृद्धि हो जाती है।

किसी भी निर्माण उद्योग को कच्चे माल से परिष्कृत सामग्री बनाने के स्तर के आधार पर तीन भागों में बाँटते हैं, यथा - शिल्प उद्योग, कुटीर उद्योग, फैक्ट्री उद्योग।

आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत किसी भी उद्योग की स्थिति या अवस्थिति या स्थानीयकरण एक महत्वपूर्ण बिन्दु है। जो उद्योग की सफलता को निर्धारित करती है, इस आधार पर किसी भी उद्योग की अवस्थिति पर कई कारकों का प्रभाव रहता है। जिन्हें हम उद्योग अवस्थिति या स्थानीय-करण कारक कहते हैं, जिनका वर्णन निम्नरूपेण है।

1) **भौगोलिक कारक** :- किसी भी उद्योग स्थापना में भौगोलिक कारक सर्वाधिक प्रभावी हैं, क्योंकि कच्चे माल, शक्ति संसाधन, श्रम, बाजार एवं परिवहन के साधन भौगोलिक तत्वों से निर्धारित होती है। प्रत्येक उद्योग के कच्चा माल मुख्यतः प्रकृति प्रदत्त होते हैं जो भौगोलिक स्थान विशेष पर निर्धारित होता है। उद्योगों में बड़ी मशीनों के संचालन में शक्तिसंसाधन

स्वरूप कोयला, पेट्रोलियम या जलशक्ति की उपलब्धता भी भौगोलिक तत्वों पर निर्भर है। श्रम शक्ति, जनबहुल प्रदेशों में प्राप्त होता है जहाँ भौगोलिक तत्व मानव बसाव के उपयुक्त है। साथ ही खपत के लिए बाजार भी ऐसे ही प्रदेशों में होती है, मानव श्रम तथा तकनीकि ज्ञान का विकास एवं प्रयोग परिवहन साधन भी इन्ही जनबहुल क्षेत्रों में अधिक होने से उद्योग स्थापना के लिए उपयुक्त दशा मिल जाती है।

2) आर्थिक कारक → किसी भी उद्योग स्थापना के लिए पूँजी दूसरी सबसे महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि उद्योग संचालन के लिए उद्योग स्थापना की जगह, मशीने, श्रम, कच्चा माल, परिवहन जैसे सभी तत्वों की सुलभ उपलब्धता पूँजी द्वारा ही संभव है। अधिकतर पूजीपति देशों में ही उद्योगों का विकास इसी कारण से अधिक हुआ है। किसी भी विषम परिस्थिति में उद्योग को संचालित करने में मदद करती है।

3) तकनीकि कारक → हम जानते है उद्योग तीन प्रकार के होते है जिसमें लघु एवं कुटीर उद्योग मानव द्वारा छोटे पैमाने पर संचालित होती है, लेकिन उद्योगों के विकास एवं विस्तार में विज्ञान, इंजीनियरिंग एवं तकनीकि कारक मुख्य भूमिका निभाती है, यह कारक ही बड़े पैमाने पर कम मानव श्रम के बावजूद अधिक उत्पादन करने वाले उद्योग बन जाते है।

4) राजनीतिक कारक → निर्माण उद्योगों की अवस्थिति पर राजनीतिक कारक का भी प्रभाव मुख्य है किसी भी प्रदेश की राजनीतिक परिवेश उद्योगों के स्थापना को प्रभावित करती है। प्रमुख राजनीतिक कारक कुछ इस प्रकार है —
a) औद्योगिक प्रोत्साहन की सरकारी नीति b) आयात

और निर्यात शुल्क दरें c) अन्तर्राष्ट्रीय संबंध तथा मित्र देशों के साथ व्यापारिक समझौते एवं नीतियाँ, d) सुरक्षा एवं शान्ति व्यवस्था e) एकाधिकार-नीतियाँ इत्यादि।

5) ऐतिहासिक कारक → किसी भी उद्योग की स्थापना का ऐतिहासिक महत्व भी उसके अवस्थिति को नियंत्रित एवं प्रभावित करती है, जैसे कोई औद्योगिक क्षेत्र जो बहुत समय से औद्योगिक उन्नति के लिए प्रसिद्ध हो चुका है वह क्षेत्र नए उद्योगों को आकर्षित करती है कभी किसी उद्योग की स्थापना प्राचीन काल में कच्चे माल या ईंधन मिलने की सुविधा से चालू किए गए तो उन कच्चे मालों के समाप्ति के बाद भी वहाँ उद्योग चलते रहता है।

6) व्यक्तिगत कारक → कभी कभी व्यक्तिगत कारकों द्वारा ही निर्माण उद्योगों की स्थापना हो जाती है, जैसे कि सं० रा० अमेरिका के हेनरीफोर्ड को डेट्राइट जगह पसंद आई और व्यक्तिगत रूप से वहाँ मोटर की फैक्ट्री को स्थापना कर दी उसी प्रकार राजस्थान के पिलानी में बिड़ला परिवार अपने जन्मभूमि को ही उद्योग केन्द्र बनाना चाहे और आज वहाँ कई उद्योग बिड़ला परिवार द्वारा ही संचालित होती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि किसी भी उद्योग की स्थापना के या अवस्थिति के लिए उपर्युक्त सभी कारकों का होना आवश्यक होता है।

—x—